

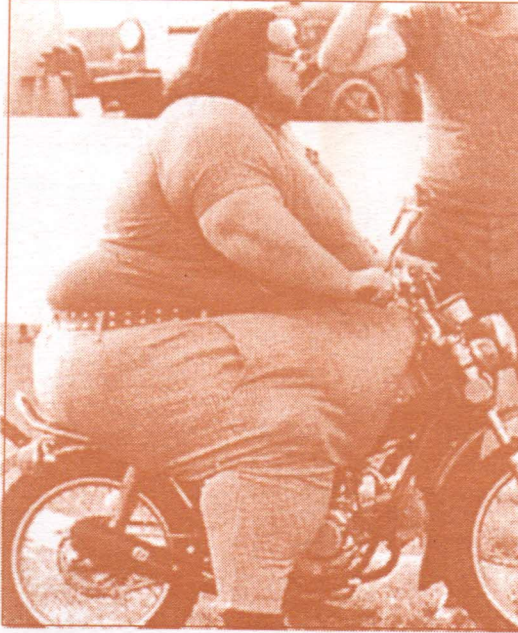
मोटापे का एक जीन तो मिला

यदि आप बिना रुके खाते चले जाते हैं तो आपका दिमाग खराब है। यानी आपके दिमाग का कोई हिस्सा है जो ठीक से काम नहीं कर रहा है। ब्रिटेन के कैम्ब्रिज इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल रिसर्च के स्टीफन राहिली और उनके साथियों का यही विचार है।

हमारे दिमाग के हायपोथैलेमस नामक अंग में एक संवेदना-ग्राही पाया जाता है। इसे मेलैनोकार्टिन-4 ग्राहक कहते हैं। यह ग्राहक एक अन्य प्रोटीन से संकेत प्राप्त करता है। यह प्रोटीन एक

हॉर्मोन लेप्टिन की वजह से सक्रिय होता है। लेप्टिन वह हॉर्मोन है जो हमारे दिमाग को सूचना देता है कि "पेट भर गया है।" मतलब लेप्टिन हॉर्मोन एक प्रोटीन को सक्रिय करेगा, प्रोटीन जाकर मेलैनोकार्टिन-4 ग्राहक को संकेत देगा और इस तरह से दिमाग को पता चलेगा कि 'टंकी फुल हो गई है'। अब मान लीजिए इस पूरी शृंखला में कोई एक कड़ी काम न करे। तो आप खाते चले जाएंगे।

स्टीफन राहिली व साथियों ने पता लगाया है कि पेटू लोगों में मेलैनोकार्टिन-4 ग्राही बनाने के लिए ज़िम्मेदार जीन अपना काम नहीं करता है - जब जीन काम नहीं करता है तो ग्राही नहीं बनता है। राहिली ने ऐसे 500 लोगों पर अनुसंधान किया जो कम उम्र में ही मोटे हो गए थे। उन्होंने पाया कि इनमें 6 प्रतिशत में मेलैनोकार्टिन-4 ग्राही का जीन गड़बड़ था। उन्होंने यह भी देखा कि जिन बच्चों में यह जीन गड़बड़ था, वे सामान्य से 4 गुना ज्यादा नाश्ता



खाते थे। यह भी देखा गया कि जीन की थोड़ी गड़बड़ी वाले बच्चे इन दो के बीच कहीं होते हैं।

राहिली का तो मत है कि इस ग्राही की हालत देखकर ही आप बता सकते हैं कि वह व्यक्ति कितना खाएगा। निर्धारित रेट में भरपेट खिलाने वाले होटल मालिक यह जानकर बहुत खुश होंगे। एक अन्य अध्ययन से भी पता चला है कि मेलैनोकार्टिन-4 ग्राही की गड़बड़ी और पेटूपन के बीच सम्बंध है।

तो, सवाल यह है कि इस बारे में क्या किया जा सकता है। एक सम्भावना तो यह है कि उन मोटे लोगों को पहचानने की कोशिश की जाए जो इस जीन में गड़बड़ी की वजह से मोटे हुए हैं और उनका उपचार अलग से किया जाए। अभी ऐसा कोई उपचार सामने नहीं आया है। हमारे शरीर में हरेक जीन की दो प्रतिलिपियां होती हैं। यदि इनमें से एक सही है तो यह कोशिश की जा सकती है कि सही वाली काम करे। एक तरीका यह भी हो सकता है कि किसी तरह से दोषपूर्ण ग्राही को बायपास किया जाए।

अभी इस तरह की खोजें होने की उम्मीद है क्योंकि मोटापा सम्पन्न देशों की एक प्रमुख समस्या बन गया है। हो सकता है कि वहां के मोटे लोगों में एक से अधिक ऐसे गड़बड़ीशुदा जीन हों। भोजन की तंगी के दौर में इन गड़बड़ियों से कुछ फर्क नहीं पड़ता। मगर जब भोजन प्रचुरता में उपलब्ध हो, तो ये जीन महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

(स्रोत विशेष फीचर्स)